उपन्यास

आलोचना + निबंध

Hindi (Unit II) - Part I

Crash Course on Hindi through MCQs (Units - II, IV, VI, VII, VIII)

Ram Kumar Mishra • Lesson 1 • July 25, 2022

Upanyas Revision By Ram Kumar Mishra

- उपन्यास आधुनिक गद्य की एक प्रमुख विधा है जिसका जन्म 18वीं शताब्दी में पश्चिम में हुआ।
- 'उपन्यास' दो शब्दों से मिलकर बना है- 'उप' अर्थात् निकट तथा 'न्यास' अर्थात् थाती। इस आधार पर उपन्यास का अर्थ है वह रचना जो सामाजिक जीवन के अत्यंत निकट हो।
- सामाजिक जीवन के निकट होने के कारण ही उपन्यास को 'आधुनिक युग का महाकाव्य' कहा गया है।
- 'राल्फ फॉक्स' ने अपने प्रसिद्ध लेख 'The Novel as an EPIC' ('उपन्यास महाकाव्य के रूप में') में उपन्यास को 'महाकाव्य' के समकक्ष बताया है।
- उपन्यास का मूल संबंध यथार्थ से माना गया है और इसी अर्थ में यह पारंपरिक आख्यायिकाओं से अलग है।
- विभिन्न आलोचकों ने इस यथार्थवादी आग्रह को उपन्यास का सामान्य कथा से भेदक तत्त्व माना है।
- नॉवेल को बांग्ला और हिंदी में 'उपन्यास', उर्दू में 'नाविल', मराठी में 'कादम्बरी' तथा गुजराती में 'नवलकथा' की संज्ञा प्राप्त है।
- भारत में उपन्यास की विधा पाश्चात्य सहित्य की देन है जिसका

सबसे पहले प्रभाव बांग्ला साहित्य पर पड़ा। अंग्रेज़ी उपन्यासकार हेनरी फील्डिग कृत 'टॉम जोन्स' की तर्ज़ पर टेकचंद्र ठाकुर ने 'आलालेर घरेर दुलाल' (1857 ई.) नामक उपन्यास रचा जिसे कुछ विद्वान प्रथम बांग्ला उपन्यास भी मानते हैं। 'दुर्गेशनंदिनी' (1865 ई.) की रचना कर प्रथम बांग्ला मौलिक उपन्यासकार के रूप में ख्यातिप्राप्त बंकिमचंद्र भी अंग्रेज़ी उपन्यासकारों से अत्यधिक प्रभावित थे।

1873 ई. में 'दुर्गेशनंदिनी' हिंदी में अनूदित होकर आई। तत्पश्चात् 1882 ई. में श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षागुरु' का प्रकाशन हुआ जिसे बांग्ला के प्रथम मौलिक उपन्यास का गौरव प्राप्त है।

इस प्रकार हिंदी के प्रारंभिक उपन्यासों पर बांग्ला और अंग्रेज़ी उपन्यासों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

हिंदी में नॉवेल के अर्थ में उपन्यास पद का सर्वप्रथम प्रयोग भारतेंदु हरिश्चंद्र ने सन् 1875 ई. में 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' में प्रकाशित अपनी अपूर्ण रचना 'मालती' के लिये किया।

अध्ययन की सुविधा के लिये हिंदी उपन्यास का काल-विभाजन स्थूल रूप से- प्रेमचंद पूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग तथा स्वातंत्र्योत्तर युग के रूप में किया गया है।

- हिंदी में प्रथम उपन्यास के संबंध में विद्वानों के मत इस प्रकार हैं–

उपन्यास (वर्ष)	उपन्यासकार	प्रस्तोता
देवरानी जेठानी की कहानी (1870 ई.)	पं. गौरी दत्त	डॉ. गोपाल राय
भाग्यवती (1877 ई.)	श्रद्धाराम फिल्लौरी	डॉ. विजयशंकर मल्ल
परीक्षागुरु (1882 ई.)	लाला श्रीनिवासदास	आचार्य रामचंद्र शुक्ल

- आरंभिक हिंदी उपन्यासों में रोमांच एवं उपदेश का तत्त्व प्रधान था। इनमें अधिकतर यथार्थवादी शैली के स्थ का उपयोग किया गया था।
- इस युग में मुख्यत: तीन प्रकार के उपन
  (i) सुधारवादी उपन्यास,
  (ii) मनोरंजनपरक उपन्यास (तिलिस्मी-ा उपन्यास) और
  (iii) ऐतिहासिक उपन्यास।

प्रेमचंद पूर्व युग के महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार एवं उपन्यास

उपन्यासकार (ई. में)	उपन्यास (ई. में)
पं. गौरी दत्त (1836-1906)	देवरानी जेठानी की कहानी (1870)
ईश्वरी प्रसाद एवं कल्याण राय	वामा शिक्षक (1872)
श्रद्धाराम फिल्लौरी (1837-1881)	भाग्यवती (1877)
लाला श्रीनिवासदास (1851-1887)	परीक्षागुरु (1882)
बालकृष्ण भट्ट (1844-1914)	1. रहस्य कथा (1879) 2. नूतन ब्रह्मचारी (1886) 3. सौ अजान एक सुजान (1892) 4. सद्भाव का अभाव (अधूरा)

ठाकुर जगमोहन सिंह (1857-1899)

श्यामा स्वप्न (1888)

राधाकृष्ण दास (1865-1907)

निस्सहाय हिंदू (1890)

लज्जाराम मेहता (1863-1931)

1. धूर्त रसिकलाल (1899)
2. स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी (1899)
3. आदर्श दंपत्ति (1904)
4. बिगड़े का सुधार अथवा सतीसुख देवी (1907)
5. सुशीला विधवा (1907)
6. आदर्श हिंदू (1914)

किशोरीलाल गोस्वामी (1865-1932)

- रामचंद्र शुक्ल ने किशोरीलाल गोस्वामी को हिंदी का प्रथम प्रतिष्ठित उपन्यासकार माना है।
- गोस्वामी जी ने लगभग 65 उपन्यासों की रचना की है।

सामाजिक उपन्यास

1. स्वर्गीयकुसुम वा कुसुमकुमारी (1889)
2. प्रणयिनी परिणय (1890)
3. त्रिवेणी वा सौभाग्य श्रेणी (1890)
4. लीलावती वा आदर्शसती (1901)
5. चपला वा नव्य समाज चित्र (1903)
6. तरुणतपस्विनी वा कुटीरवासिनी (1905)
7. पुनर्जन्म वा सौतिया डाह (1907)
8. माधवीमाधव वा मदनमोहिनी (1909)
9. अँगूठी का नगीना (1918)

ऐतिहासिक उपन्यास

1. हृदयहारिणी वा आदर्शरमणी (1890)
2. लवंगलता वा आदर्शबाला (1890)
3. तारा वा क्षत्रकुलकमलिनी (1902)
4. राजकुमारी (1902)
5. कनककुसुम वा मस्तानी (1904)
6. सुल्ताना रजिया बेगम वा रंगमहल में हलाहल (1905)
7. मल्लिका देवी वा वंग सरोजिनी (1905)
8. लालकुँवरी वा शाही रंगमहल (1909)
9. सोना और सुगंध वा पन्नाबाई (1909)
10. लखनऊ की कब्र वा शाहीमहलसरा (1917)

ठाकुर जगमोहन सिंह (1857-1899)	श्यामा स्वप्न (1888)	
राधाकृष्ण दास (1865-1907)	निस्सहाय हिंदू (1890)	
लज्जाराम मेहता (1863-1931)	1. धूर्त रसिकलाल (1899) 2. स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी (1899) 3. आदर्श दंपत्ति (1904)	4. बिगड़े का सुधार अथवा सतीसुख देवी (1907) 5. सुशीला विधवा (1907) 6. आदर्श हिंदू (1914)

ठाकुर जगमोहन सिंह (1857-1899)	श्यामा स्वप्न (1888)	
राधाकृष्ण दास (1865-1907)	निस्सहाय हिंदू (1890)	
लज्जाराम मेहता (1863-1931)	1. धूर्त रसिकलाल (1899) 2. स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी (1899) 3. आदर्श दंपत्ति (1904)	4. बिगड़े का सुधार अथवा सतीसुख देवी (1907) 5. सुशीला विधवा (1907) 6. आदर्श हिंदू (1914)
किशोरीलाल गोस्वामी (1865-1932) • रामचंद्र शुक्ल ने किशोरीलाल गोस्वामी को हिंदी का प्रथम प्रतिष्ठित उपन्यासकार माना है। • गोस्वामी जी ने लगभग 65 उपन्यासों की रचना की है।	**सामाजिक उपन्यास** 1. स्वर्गीयकुसुम वा कुसुमकुमारी (1889) 2. प्रणयिनी परिणय (1890) 3. त्रिवेणी वा सौभाग्य श्रेणी (1890) 4. लीलावती वा आदर्शसती (1901) 5. चपला वा नव्य समाज चित्र (1903) 6. तरुणतपस्विनी वा कुटीरवासिनी (1905) 7. पुनर्जन्म वा सौतिया डाह (1907) 8. माधवीमाधव वा मदनमोहिनी (1909) 9. अँगूठी का नगीना (1918)	**ऐतिहासिक उपन्यास** 1. हृदयहारिणी वा आदर्शरमणी (1890) 2. लवंगलता वा आदर्शबाला (1890) 3. तारा वा क्षत्रकुलकमलिनी (1902) 4. राजकुमारी (1902) 5. कनककुसुम वा मस्तानी (1904) 6. सुल्ताना रजिया बेगम वा रंगमहल में हलाहल (1905) 7. मल्लिका देवी वा वंग सरोजिनी (1905) 8. लालकुँवरी वा शाही रंगमहल (1909) 9. सोना और सुगंध वा पन्नाबाई (1909) 10. लखनऊ की कब्र वा शाहीमहलसरा (1917)

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947 ई.)	1. ठेठ हिंदी का ठाठ (1899)	2. अधखिला फूल (1907)
देवकीनंदन खत्री (1861-1913 ई.)	1. चंद्रकांता (1888) 2. चंद्रकांता संतति (1896; 6 भाग में) 3. नरेंद्र मोहिनी (1893) 4. वीरेंद्रवीर (1895) 5. कुसुम कुमारी (1899)	6. काजर की कोठरी (1902) 7. अनूठी बेगम (1905) 8. गुप्तगोदना (1913) 9. भूतनाथ (अधूरा)

गोपालराम गहमरी (1866–1946 ई.) • गोपालराम गहमरी को हिंदी में जासूसी उपन्यासों का प्रवर्तक माना जाता है। • गोपालराम गहमरी को हिंदी का **'कानन डायल'** (अंग्रेज़ी के लोकप्रिय जासूसी उपन्यासकार) कहा जाता है।	1. अद्‌भुत लाश (1896) 2. गुप्तचर (1899) 3. बेकसूर की फाँसी (1900) 4. सरकटी लाश (1900) 5. खूनी कौन (1900) 6. बेगुनाह का खून (1900) 7. डबल जासूस (1900) 8. मायाविनी (1901) 9. चक्करदार चोरी (1901) 10. मालगोदाम में चोरी (1901) 11. जासूस की भूल (1901)	12. जासूस की चोरी (1902) 13. मेरी और मेरीना (1905) 14. रहस्य विप्लव (1905) 15. भयंकर भेद (1907) 16. किले में खून (1910) 17. भोजपुर की ठगी (1911) 18. जासूस की डायरी (1912) 19. गुप्तभेद (1913) 20. जासूस की ऐयारी (1914) 21. गाड़ी में लाश (1920)
ब्रजनंदन सहाय (1874)	1. राजेंद्र मालती (1897) 2. सौंदर्योपासक (1912) 3. लालचीन (1916)	4. अद्‌भुत प्रायश्चित (1906) 5. अरण्यबाला (1915) 6. राधाकांत (1918)
भुवनेश्वर मिश्र	1. धराऊ घटना (1893)	2. बलवंत भूमिहार (1896)

- 'देवरानी जेठानी की कहानी' स्त्रियों के पढ़ने-लिखने तथा उन्हें गृहस्थ धर्म का उपदेश देने के लिये लिखा गया था। स्त्री शिक्षा के साथ-साथ यह उपन्यास उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यवर्गीय बनिया समाज के जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है।
- 'वामा शिक्षक' उपन्यास में 'ढाई गाँव के ज़मींदार' लाला भगवानदास के परिवार की कथा प्रस्तुत की गई है। उपन्यास का पात्र 'मथुरादास' बाल विवाह तथा विवाह के अवसर पर किये जाने वाले अपव्यय का विरोधी है।
- श्रद्धाराम फिल्लौरी कृत 'भाग्यवती' में स्त्री-शिक्षा मुख्य कथ्य है, जिसके साथ मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार तथा समाज की तत्कालीन जीवन दशा का चित्रण हुआ है।

- ब्रजरत्नदास के अनुसार भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'कुछ आपबीती कुछ जगबीती' शीर्षक से एक उपन्यास लिखना आरंभ किया था, जिसका केवल एक हिस्सा 'प्रथम खेल' नाम से प्रकाशित हुआ था।
- बालकृष्ण भट्ट के उपन्यास 'रहस्यकथा' में अवध के एक गाँव और लखनऊ से जुड़े ज़मींदार परिवार की कथा प्रस्तुत की गई है। गोपाल राय के अनुसार हिंदी उपन्यास में विवाहपूर्व प्रेम का अंकन भी 'रहस्यकथा' उपन्यास से ही आरंभ होता है।
- 'नूतन ब्रह्मचारी' उपन्यास का पूरा नाम 'नूतन ब्रह्मचारी : एक सहृदय के हृदय का विकास' है। इसमें विनायक राव नाम का बालक केंद्रीय पात्र है जो 'नूतन ब्रह्मचारी' और 'सहृदय' है। उसके चरित्र का विकास प्रस्तुत करना ही उपन्यास का लक्ष्य है।

गोपाल राय के अनुसार 'नूतन ब्रह्मचारी' की कथा तब की है जब भारत पर अंग्रेज़ों का एकक्षत्र राज नहीं था, उस समय पिंडारी लूट-पाट करते थे। इस उपन्यास में ब्रह्मचारी विनायक के सद्व्यवहार के माध्यम से डाकुओं का हृदय परिवर्तन दिखाया गया है।

- 'नूतन ब्रह्मचारी' की ऐतिहासिक कथावस्तु के आधार पर डॉ. गोपाल राय ने बालकृष्ण भट्ट को 'प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार' माना है।
- 'सौ अजान एक सुजान' हिंदी का पहला उपन्यास है जिसमें चरित्र-चित्रण को कथा या उद्देश्य की तुलना में प्राथमिकता दी गई है। इस कथा में 'ऋषिनाथ' तथा 'निधिनाथ' दो अजानों (अज्ञानियों) को गुरु चंद्रशेखर (सुजान) द्वारा बचाने एवं उचित मार्ग पर लाने की कथा वर्णित है।
- जगमोहन सिंह कृत 'श्यामा स्वप्न' का विशेष महत्त्व इसके शिल्प को लेकर है।
- स्वयं लेखक ने पुस्तक के मुख्यपृष्ठ पर इसे 'गद्यप्रधान चार खंडों में एक कल्पना' और 'An original Novel in Hindi Prose' की संज्ञा दी।

- 'श्यामा स्वप्न' हिंदी में आख्यायिका शैली का प्रथम उपन्यास माना गया है।
- गोपाल राय के अनुसार राधाकृष्णदास द्वारा रचित 'निस्सहाय हिंदू' हिंदी का पहला ऐसा उपन्यास है जिसमें मुस्लिम समाज का अंकन हुआ है। यह गोवध-निवारण हेतु लिखा गया उपन्यास है।
- 'निस्सहाय हिंदू' हिंदी का पहला पूर्ण उपन्यास है जिसमें नाटकीय पद्धति पर प्रसंगों के निर्माण तथा कथाओं के युगपत् संक्रमण की प्रविधि अपनाई गई।
- किशोरीलाल गोस्वामी को हिंदी में ऐतिहासिक उपन्यास लेखन परंपरा का जन्मदाता माना जाता है।
- किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'हृदयहारिणी' हिंदी का पहला ऐतिहासिक उपन्यास माना गया है।

- किशोरीलाल गोस्वामी द्वारा रचित 'स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी' वेश्या जीवन पर आधारित हिंदी का पहला उपन्यास है।
- 'ठेठ हिंदी का ठाठ' उपन्यास का एक नाम 'देवबाला' भी है। इस उपन्यास में अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण हुआ है। इस उपन्यास को 'मुहावरों की पाठ्य-पुस्तक' भी कहा जाता है।
- 'तिलिस्म' और 'ऐयार' शब्द के संदर्भ में अलोचक मधुरेश लिखते हैं– "ये दोनों शब्द मूलतः अरबी भाषा के हैं। 'तिलिस्म' अरबी में ग्रीक भाषा से आया।... 'तिलिस्म' का शाब्दिक अर्थ है– अद्भुत और आश्चर्यजनक कल्पना, 'संचित कोष की रक्षा के लिये नियत की गई भयानक शक्ल, दवाओं तथा लग्नों के मेल से बँधा हुआ

यंत्र।' 'ऐयार' के अर्थ होते हैं चालाक, वेग से चलने वाला या दूर तक दौड़ने वाला।"

- 'चंद्रकांता' में नौगढ़ के राजा सुरेंद्र सिंह के पुत्र राजकुमार वीरेंद्र सिंह एवं विजयगढ़ के राजा जयसिंह की पुत्री राजकुमारी चंद्रकांता की प्रेम-कहानी वर्णित है।
- 'भूतनाथ' देवकीनंदन खत्री का अधूरा (छह भाग) उपन्यास था, जिसे उनके पुत्र दुर्गाप्रसाद खत्री ने (21 भाग) पूरा किया।
- गोपालराम गहमरी ने 200 के आस-पास जासूसी उपन्यास लिखें हैं।
- 'सौंदर्योपासक' उपन्यास में विवाह संबंधी कुप्रथाओं का जैसे- अपव्यय, दहेज-प्रथा, वृद्ध विवाह आदि का विरोध किया गया है।

प्रेमचंद (1880-1936 ई.)

- प्रेमचंद के आगमन तक हिंदी उपन्यास रोमांच, काल्पनिकता तथा नैतिक उपदेशों से भरा रहा। प्रेमचंद ने पहली बार उपन्यास परंपरा को सामाजिक यथार्थ से जोड़ा।
- प्रेमचंद ने लिखा है– "मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र मानता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।"
- प्रेमचंद लिखते हैं– "जो रचनाएँ सिर्फ मनोरंजन के लिये होती हैं, उनका महत्त्व दो कौड़ी का है।"
- प्रेमचंद का मूल नाम 'धनपत राय' था। वह उर्दू में 'नवाब राय' तथा हिंदी में 'प्रेमचंद' नाम से रचनाएँ लिखते थे।
- धनपतराय को 'प्रेमचंद' नाम उर्दू पत्र 'ज़माना' के संपादक दयानारायण निगम ने दिया था।
- प्रेमचंद को 'उपन्यास सम्राट' की संज्ञा सुप्रसिद्ध बांग्ला कथाकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा दी गई।
- प्रेमचंद ने अपने अधिकतर उपन्यास पहले उर्दू में लिखे थे, बाद में स्वयं उनका हिंदी रूपांतरण प्रस्तुत किया।
- डॉ. नगेंद्र के अनुसार **'कायाकल्प'** मूल रूप से हिंदी में लिखित प्रेमचंद का पहला उपन्यास है।
- प्रेमचंद का एकमात्र ऐतिहासिक उपन्यास **'रूठी रानी'** है, जिसका रचना वर्ष 1907 ई. है।

प्रेमचंद के उर्दू उपन्यास तथा उनके हिंदी रूपांतरण

उर्दू शीर्षक (वर्ष)	हिंदी रूपांतरण (वर्ष)
असरारे मआविद (1903-05 ई.)	देवस्थान रहस्य (1905 ई.)
हमखुर्मा-ओ-हमसवाब (1906 ई.)	प्रेमा अर्थात् दो सखियों का विवाह (1907 ई.)
किशना (1907 ई.)	गबन (1931 ई.)
जलवा-ए-ईसार (1912 ई.)	वरदान (1921 ई.)
बाज़ार-ए-हुस्न (1917 ई.)	सेवासदन (1918 ई.)
गोश-ए-आफ़ियत	प्रेमाश्रय (1922 ई.)
चौगान-ए-हस्ती	रंगभूमि (1925 ई.)

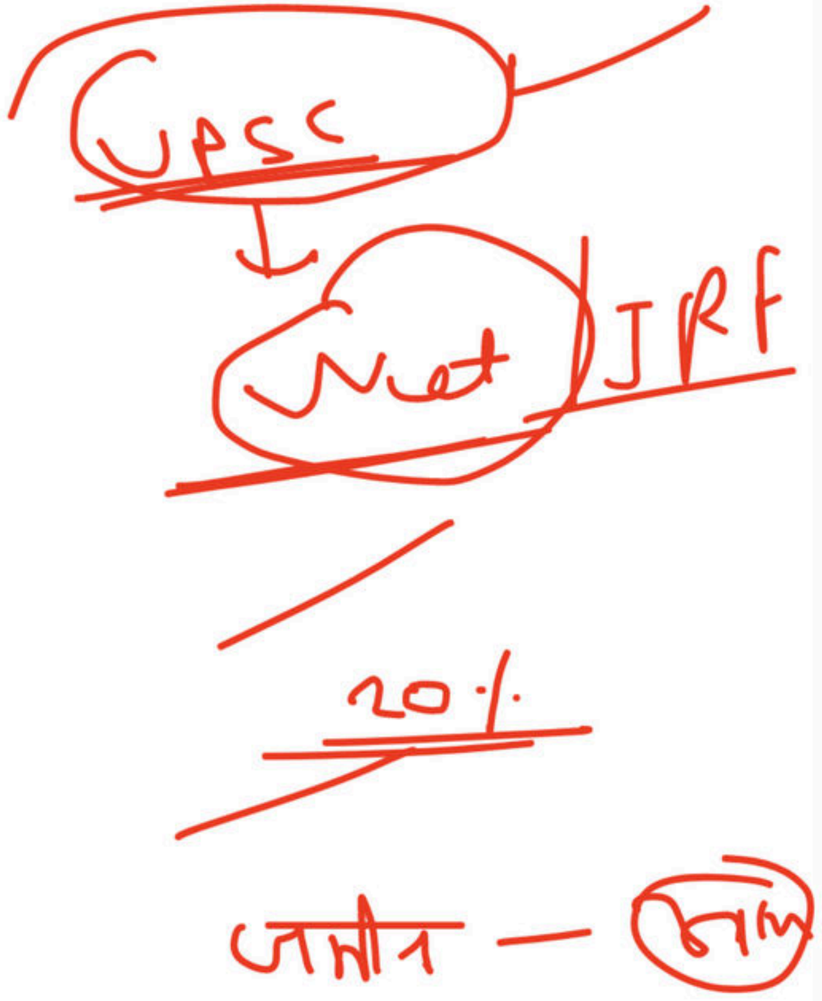
- प्रेमचंद का पहला उपन्यास 'असरारे मआविद' (उर्दू) था।
- प्रेमचंद ने 'प्रेमा अर्थात् दो सखियों का विवाह' उपन्यास को परिष्कृत कर 'प्रतिज्ञा' (1929 ई.) शीर्षक से प्रकाशित करवाया।

प्रेमचंद के उपन्यास

उपन्यास (वर्ष)	विषय वस्तु
देवस्थान रहस्य (1905 ई.)	धार्मिक स्थानों में व्याप्त भ्रष्टाचार और पाखंड चित्रण।
प्रेमा (1907 ई.)	विधवा-विवाह की समस्या का चित्रण तथा आर्य-समाजी उत्साह के साथ विधवा-विवाह का समर्थन।
सेवासदन (1918 ई.)	इसमें वेश्यावृत्ति की समस्या पर गंभीर विचार करते हुए उसके सामाजिक पक्ष की ओर अधिक ध्यान दिया गया है।
वरदान (1921 ई.)	प्रेम एवं विवाह की समस्या का चित्रण।
प्रेमाश्रम (1922 ई.)	ब्रिटिश शासन के अंतर्गत ज़मींदारों और किसानों के संबंधों का चित्रण किया गया है।
रंगभूमि (1925 ई.)	नव-विकसित पूंजीवाद और भारतीय परंपरा के द्वंद्व को व्यापक फलक पर चित्रित किया गया है। सामंतवाद, औद्योगिक पूंजीवाद, राजनीतिक एवं बौद्धिक वर्ग, प्रशासन-तंत्र और उत्पीड़ित जनता का चित्रण हुआ है।
कायाकल्प (1926 ई.)	ज़मींदारी प्रथा का वर्णन; 'जगदीशपुर' रियासत की रानी 'देवप्रिया' की विलास लीलाओं और उसके पुनर्जन्म के आलौकिक चमत्कारों की कथा।

निर्मला (1927 ई.)	दहेज एवं अनमेल विवाह की समस्या की प्रस्तुति।
गबन (1931 ई.)	दिखावे और प्रदर्शन की प्रवृत्ति तथा स्त्री की आभूषण प्रियता की त्रासदी का नाटकीय चित्रण हुआ है।
कर्मभूमि (1932 ई.)	राष्ट्रव्यापी आर्थिक मंदी और महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलने वाले स्वाधीनता आंदोलन का अंकन है। साथ ही इसमें अछूतों के सामाजिक जीवन में स्वीकृति का सवाल, सामाजिक-राजनीतिक कार्यकलापों में स्त्रियों की भूमिका के सवालों को गंभीरता से उठाया गया है।
गोदान (1936 ई.)	भारतीय किसान जीवन की महागाथा (होरी के माध्यम से) का चित्रण।

- डॉ. बच्चन सिंह ने 'प्रेमाश्रम' को हिंदी का पहला राजनीतिक उपन्यास माना है।
- बच्चन सिंह लिखते हैं, "महात्मा गांधी की कार्य-प्रणाली, जीवन-दर्शन और व्यक्तित्व के प्रति प्रेमचंद की अगाध श्रद्धा थी। 'प्रेमाश्रम' गांधीवाद के प्रभाव में ही लिखा गया था। प्रेम के माध्यम से हृदय-परिवर्तन द्वारा रामराज्य की स्थापना करना इसका ध्येय है। आंशिक रूप से यह बोलशेविक क्रांति से भी प्रभावित है।"
- 'रंगभूमि' को 'भारतीय जनजीवन का रंगमंच' कहा गया है।
- 'रंगभूमि' को बच्चन सिंह ने 'गांधीवादी जीवनदर्शन का महाकाव्यात्मक उपन्यास' कहा है।
- 'गबन' के संदर्भ में बच्चन सिंह ने लिखा है, "इसमें मध्यवर्ग की कमज़ोरियों का पर्दाफाश किया गया है।"
- प्रेमचंद पर अपने उपन्यासों में विभिन्न समस्याओं का 'आदर्शवादी' एवं 'कृत्रिम' समाधान प्रस्तुत करने का आरोप लगता रहा है।
- प्रेमचंद के मूल्यांकन के क्रम में बच्चन सिंह ने लिखा है, "प्रेमचंद



के उपन्यासों के संबंध में जो विचार व्यक्त किये गए हैं, वे प्राय: एकांगी हैं। एक ओर वे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकारों की श्रेणी में रखे जाते हैं तो दूसरी ओर उन्हें द्वितीय श्रेणी का उपन्यासकार कहा जाता है। कोई उन्हें गांधीवादी सिद्ध करता है तो कोई मार्क्सवादी; कोई आदर्शवादी कहता है तो कोई यथार्थवादी; कोई उनके कथ्य को भारतीय कहता है तो रूप को पाश्चात्य यानी अभारतीय। भिन्न-भिन्न रंगीन चश्मों से चश्मे का रंग हावी हो जाता है, प्रेमचंद पीछे छूट जाते हैं।"

- गोपाल राय ने लिखा है, "प्रेमचंद ने समकालीन मध्यवर्गीय समाज को, जो अनेक प्रकार के अंतर्विरोधों, तर्कहीन सामाजिक मान्यताओं तथा परंपरागत, रूढ़ नैतिक धारणाओं से ग्रस्त था, आलोचनात्मक दृष्टि से देखा, उसका अध्ययन-विश्लेषण किया तथा उसे अपने कथा संसार के माध्यम से प्रस्तुत किया।"
- प्रेमचंद ने कथाप्रस्तुति की दृश्यात्मक-परिदृश्यात्मक प्रविधि को अपने उपन्यासों में, विशेषकर गोदान में, शिखर पर पहुँचा दिया।

प्रेमचंद युग के अन्य महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार एवं उपन्यास

उपन्यासकार (ई. में)	उपन्यास (ई. में)		
शिवपूजन सहाय (1893-1963)	1. देहाती दुनिया (1926); इसे आंचलिक उपन्यास माना जाता है।		
पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' (1900-1967)	1. चंद हसीनों के खतूत (1927)	4. बुधुआ की बेटी (1928)	7. जीजीजी (1943)
	2. दिल्ली का दलाल (1927)	5. शराबी (1930)	8. फागुन के चार दिन (1960)
	3. चॉकलेट (1927)	6. सरकार तुम्हारी आँखों में (1937)	9. जुहू (1963)
विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' (1891-1945)	1. माँ (1929)	2. भिखारिणी (1929)	3. संघर्ष (1945)
ऋषभचरण जैन (1912-1985)	1. मास्टर साहब (1927)	8. दुराचार के अड्डे (1930)	15. चम्पाकली (1935)
	2. पैसे का साथी (1928)	9. गदर (1931)	16. मंदिर दीप (1936)
	3. दिल्ली का व्यभिचार (1928)	10. भाग्य (1931)	17. हिज़ हाइनेस (1938)
	4. बुर्केवाली (1928)	11. भाई (1931)	18. मयखाना (1938)
	5. वेश्यापुत्र (1929)	12. रहस्यमयी (1931)	19. तीन इक्के (1940)
	6. चाँदनी रात (1930)	13. मधुकरी (1933)	
	7. सत्याग्रह (1930)	14. दिल्ली का कलंक (1936)	
जयशंकर प्रसाद (1889-1937)	1. कंकाल (1929)	2. तितली (1934)	3. इरावती (1936)
चतुरसेन शास्त्री (1891-1960)	1. हृदय की परख (1918)	7. मंदिर की नर्तकी (1951)	13. गोली (1956)
	2. हृदय की प्यास (1931)	8. रक्त की प्यास (1951)	14. सह्याद्रि की चट्टानें (1959)
	3. व्यभिचार (1924)	9. अपराजिता (1952)	15. बिना चिराग का शहर (1960)
	4. अमर अभिलाषा (1933)	10. आलमगीर (1954)	16. सोना और खून (1957-1958)।
	5. आत्मदाह (1937)	11. सोमनाथ (1955)	
	6. वैशाली की नगरवधू (1948)	12. वयं रक्षामः (1955)	

सियारामशरण गुप्त (1895-1963)	1. गोद (1932)	2. अंतिम आकांक्षा (1934)	3. नारी (1937)
राधिकारमण प्रसाद सिंह (1890-1971)	1. राम-रहीम (1936) 2. पुरुष और नारी (1939)	3. संस्कार (1942) 4. चुंबन और चाँटा (1956)	
गोविंदवल्लभ पंत (1887-1961)	1. सूर्यास्त (1922) 4. एक सूत्र (1946)	2. प्रतिमा (1934)	3. मदारी (1935)
भगवती प्रसाद वाजपेयी (1899-1973)	1. प्रेमपथ (1926) 2. मीठी चुटकी (1928) 3. अनाथ पत्नी (1928) 4. मुस्कान (1929)	5. त्यागमयी (1932) 6. प्रेमनिर्वाह (1934) 7. पतिता की साधना (1936) 8. चलते-चलते (1951)	9. टूटते बंधन (1963) 10. विजयश्री (1966) 11. आज और अभी (1971)
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (1899-1961)	1. अप्सरा (1931) 2. अलका (1933) 3. निरुपमा (1936)	4. प्रभावती (1936) 5. काले कारनामे [अपूर्ण (1950)] 6. चोटी की पकड़ (1946)	7. कुल्ली भाट (1939) 8. बिल्लेसुर बकरिहा (1942) 9. इंदुलेखा (अपूर्ण)
गंगाप्रसाद श्रीवास्तव (1889-1976)	1. विलायती उल्लू (1932)	2. स्वामी चौखटानंद (1936)	3. गंगा जमुनी (1927)

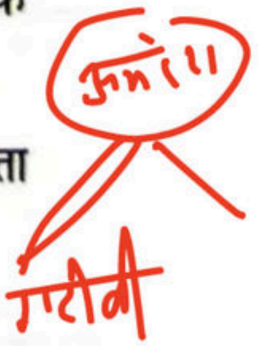
सियारामशरण गुप्त (1895-1963)	1. गोद (1932)	2. अंतिम आकांक्षा (1934)	3. नारी (1937)
राधिकारमण प्रसाद सिंह (1890-1971)	1. राम-रहीम (1936) 2. पुरुष और नारी (1939)	3. संस्कार (1942) 4. चुंबन और चाँटा (1956)	
गोविंदवल्लभ पंत (1887-1961)	1. सूर्यास्त (1922) 4. एक सूत्र (1946)	2. प्रतिमा (1934)	3. मदारी (1935)
भगवती प्रसाद वाजपेयी (1899-1973)	1. प्रेमपथ (1926) 2. मीठी चुटकी (1928) 3. अनाथ पत्नी (1928) 4. मुस्कान (1929)	5. त्यागमयी (1932) 6. प्रेमनिर्वाह (1934) 7. पतिता की साधना (1936) 8. चलते-चलते (1951)	9. टूटते बंधन (1963) 10. विजयश्री (1966) 11. आज और अभी (1971)
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (1899-1961)	1. अप्सरा (1931) 2. अलका (1933) 3. निरुपमा (1936)	4. प्रभावती (1936) 5. काले कारनामे [अपूर्ण (1950)] 6. चोटी की पकड़ (1946)	7. कुल्ली भाट (1939) 8. बिल्लेसुर बकरिहा (1942) 9. इंदुलेखा (अपूर्ण)
गंगाप्रसाद श्रीवास्तव (1889-1976)	1. विलायती उल्लू (1932)	2. स्वामी चौखटानंद (1936)	3. गंगा जमुनी (1927)

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

- पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' कृत 'चंद हसीनों के खतूत' हिंदी में पत्रात्मक प्रविधि का प्रवर्तक उपन्यास है।
- 'बुधुआ की बेटी' उपन्यास का दूसरा संस्करण **'मनुष्यानंद'** शीर्षक से 1955 ई. में प्रकाशित हुआ। इसमें अछूतोद्धार की समस्या केंद्र में है।
- 'चंद हसीनों के खतूत' उपन्यास में हिंदू और मुस्लिम युवक-युवती के प्रेम और विवाह तथा सांप्रदायिक सद्भाव का चित्रण हुआ है।
- 'दिल्ली का दलाल' उपन्यास में कन्याओं और युवतियों की खरीद-फरोख्त करने वाली संस्थाओं के कार्यों को उजागर किया है।
- 'शराबी' उपन्यास में वेश्याओं के जीवन, शराबघरों के यथार्थ का अंकन हुआ है।
- 'सरकार तुम्हारी आँखों में' उपन्यास में सामंती जीवन की विलासप्रियता तथा राज्य द्वारा विलास की वस्तुओं पर किये गए अपव्यय का चित्रण है।

विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'

- विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' कृत 'माँ' उपन्यास में आदर्श माँ के स्वरूप तथा वास्तविक माँ एवं गोद लेने वाली माँ के मध्य अंतर चित्रित हुआ है।
- गोपाल राय के अनुसार 'भिखारिणी' उपन्यास में जाति-भावना के द्वंद्व में प्रेम की पराजय और त्रासदी का चित्रण हुआ है।
- 'संघर्ष' उपन्यास में आर्थिक विषमता के कारण प्रेम की निष्फलता का अंकन हुआ है।



जयशंकर प्रसाद

- जयशंकर प्रसाद कृत 'कंकाल' में हिंदू समाज की विकृतियों का चित्रण हुआ है। साथ ही प्रचलित तीर्थ स्थानों के मिथ्याडंबरों एवं दुराचारों का यथार्थ चित्रण हुआ है।
- 'तितली' उपन्यास में किसान-मज़दूर वर्ग पर होने वाले अत्याचारों तथा निम्न वर्ग की दयनीय स्थिति का चित्रण हुआ है।

- 'इरावती' जयशंकर प्रसाद का अपूर्ण (ऐतिहासिक) उपन्यास है।

सियारामशरण गुप्त

- सियारामशरण गुप्त गांधीवादी विचारधारा को अपने उपन्यासों में लेकर चलते हैं।
- सियारामशरण गुप्त कृत 'गोद' उपन्यास में संदेह तथा अविश्वास के कारण स्त्री पर समाज द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों का चित्रण है।
- 'अंतिम आकांक्षा' में पात्र रामलाल के माध्यम से सामाजिक विषमता तथा समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का अंकन हुआ है।
- 'नारी' उपन्यास में तत्कालीन भारतीय स्त्री की असहायता और विवशता का चित्रण हुआ है। 'नारी' उपन्यास सियारामशरण गुप्त का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कृत 'अप्सरा' में एक अभिजातकुलीन युवक तथा एक वेश्यापुत्री के प्रेम तथा विवाह का चित्रण हुआ है।
- 'अलका' उपन्यास में निराला ने अवध क्षेत्र के किसानों की अभावग्रस्त तथा दयनीय स्थितियों का चित्रण किया है।
- गोपाल राय के अनुसार 'निरुपमा' में निराला ने अपने समय के आर्थिक एवं वैचारिक रूप से पिछड़े, रूढ़िगत संस्कारों में जकड़े ग्रामीण समाज का बड़ा तल्ख चित्रण किया है।
- 'प्रभावती' उपन्यास को स्वयं निराला ने 'ऐतिहासिक रोमांस' की संज्ञा दी थी।

चतुरसेन शास्त्री

- चतुरसेन शास्त्री का उपन्यास लेखन प्रेमचंद युग से आरंभ होता है। यद्यपि एक उपन्यासकार के रूप में वह परवर्ती दौर में स्थापित होते हैं किंतु अध्ययन की सुविधा के लिये इनकी सभी रचनाओं का विवेचन इसी युग में किया गया है।

- 'हृदय की परख', 'हृदय की प्यास', 'व्यभिचार', 'अमर अभिलाषा' तथा 'आत्मदाह' उनके विवेच्य युग के उपन्यास हैं तथा अन्य उपन्यास परवर्ती दौर के हैं।
- गोपाल राय के अनुसार, 'हृदय की परख' उपन्यास में विवाहपूर्व प्रेम और फलस्वरूप माता-पिता बन जाने वाले प्रेमियों तथा 'अवैध संतान' की समस्याओं का चित्रण किया गया है।
- 'अमर अभिलाषा' में विधवाओं पर होने वाले अत्याचार तथा 'व्यभिचार' उपन्यास में प्रेम के अमर्यादित तथा अश्लील रूप का चित्रण है।
- 'आत्मदाह' उपन्यास में स्वाधीनता आंदोलन एवं देशप्रेम का स्वर प्रमुख है।
- गोपाल राय के अनुसार, 'वैशाली की नगरवधू' में बौद्ध साहित्य की सुप्रसिद्ध पात्र अंबपाली के चरित्र को केंद्र में रखकर उस काल की

ब्राह्मण, बौद्ध और जैन संस्कृतियों के मध्य टकराव तथा मगध, काशी, कोशल और गणराज्य वैशाली के राजनीतिक संघर्षों का अंकन हुआ है।

- **'वयं रक्षामः'** उपन्यास में राम-रावण कथा को केंद्र में रखकर आर्य, राक्षस, देव-दानव आदि संस्कृतियों के मध्य संघर्ष और समन्वय की कथा वर्णित है।
- **'सोमनाथ'** उपन्यास में शिवोपासना के विकास का वर्णन हुआ है। साथ ही इसमें प्रसिद्ध शिव मंदिर को महमूद गजनवी द्वारा 1024 ई. में तोड़े और लूटे जाने की कथा वर्णित है।
- आदित्य प्रसन्नराय के उपन्यास **'मुन्नी की डायरी'** से हिंदी उपन्यास में डायरी प्रविधि का आरंभ माना जाता है।
- पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', ऋषभचरण जैन तथा चतुरसेन शास्त्री प्राकृतिवादी शैली के उपन्यासकार माने जाते हैं।

- प्रेमचंदोत्तर युग के उपन्यासों का विवेचन डॉ. नगेंद्र तथा मधुरेश ने निम्नलिखित रूप से किया है–

मनोविश्लेषणवादी उपन्यास

- जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय तथा डॉ. देवराज प्रमुख मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार हैं। जिनका विवेचन निम्नलिखित है–

प्रमुख मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार एवं उपन्यास

उपन्यासकार (ई. में)	उपन्यास (ई. में)		
जैनेंद्र कुमार (1905-1988)	1. परख (1929)	5. सुखदा (1952)	9. मुक्तिबोध (1965)
	2. सुनीता (1934)	6. विवर्त (1953)	10. अनन्तर (1968)
	3. त्यागपत्र (1937)	7. व्यतीत (1953)	11. अनाम स्वामी (1974)
	4. कल्याणी (1939)	8. जयवर्धन (1956)	12. दशार्क (1985)
इलाचंद्र जोशी (1902-1982)	1. घृणामयी (प्रथम नाम 'लज्जा'- 1929)	5. निर्वासित (1946)	9. जहाज का पंक्षी (1954)
	2. संन्यासी (1940)	6. मुक्तिपथ (1948)	10. ऋतु चक्र (1969)
	3. पर्दे की रानी (1942)	7. सुबह के भूले (1951)	11. भूत का भविष्य (1973)
	4. प्रेत और छाया (1944)	8. जिप्सी (1952)	12. कवि की प्रेयसी (1976)
अज्ञेय (1911-1987)	1. शेखर: एक जीवनी (पहला भाग 1940, दूसरा भाग 1944)		
	2. नदी के द्वीप (1951)	3. अपने-अपने अजनबी (1961)	
डॉ. देवराज (1917-1999)	1. पथ की खोज (1951)	4. अजय की डायरी (1960)	7. दूसरा सूत्र (1978)
	2. बाहर भीतर (1954)	5. मैं वे और आप (1969)	
	3. रोड़े और पत्थर (1958)	6. दोहरी आग की लपट (1973)	

Upanyas Revision Part 2
By
Ram Kumar Mishra

प्रेमचंदोत्तर युग (1936 ई. से वर्तमान तक)

- प्रेमचंदोत्तर युग के उपन्यासों का विवेचन डॉ. नगेंद्र तथा मधुरेश ने निम्नलिखित रूप से किया है–

मनोविश्लेषणवादी उपन्यास

- जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय तथा डॉ. देवराज प्रमुख मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार हैं। जिनका विवेचन निम्नलिखित है–

प्रमुख मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार एवं उपन्यास

उपन्यासकार (ई. में)	उपन्यास (ई. में)		
जैनेंद्र कुमार (1905-1988)	1. परख (1929)	5. सुखदा (1952)	9. मुक्तिबोध (1965)
	2. सुनीता (1934)	6. विवर्त (1953)	10. अनन्तर (1968)
	3. त्यागपत्र (1937)	7. व्यतीत (1953)	11. अनाम स्वामी (1974)
	4. कल्याणी (1939)	8. जयवर्धन (1956)	12. दशार्क (1985)
इलाचंद्र जोशी (1902-1982)	1. घृणामयी (प्रथम नाम 'लज्जा' - 1929)	5. निर्वासित (1946)	9. जहाज का पंक्षी (1954)
	2. संन्यासी (1940)	6. मुक्तिपथ (1948)	10. ऋतु चक्र (1969)
	3. पर्दे की रानी (1942)	7. सुबह के भूले (1951)	11. भूत का भविष्य (1973)
	4. प्रेत और छाया (1944)	8. जिप्सी (1952)	12. कवि की प्रेयसी (1976)
अज्ञेय (1911-1987)	1. शेखर: एक जीवनी (पहला भाग 1940, दूसरा भाग 1944)		
	2. नदी के द्वीप (1951)	3. अपने-अपने अजनबी (1961)	
डॉ. देवराज (1917-1999)	1. पथ की खोज (1951)	4. अजय की डायरी (1960)	7. दूसरा सूत्र (1978)
	2. बाहर भीतर (1954)	5. मैं वे और आप (1969)	
	3. रोड़े और पत्थर (1958)	6. दोहरी आग की लपट (1973)	

जैनेंद्र

- जैनेंद्र को हिंदी में मनोविश्लेषणवादी उपन्यास का आरंभकर्त्ता माना जाता है।
- जैनेंद्र के अधिकांश उपन्यासों का मूल विषय काम-पीड़ा एवं अहं का समर्पण है।
- जैनेंद्र के संबंध में डॉ. गोपाल राय ने लिखा है- "व्यक्ति के आंतरिक जीवन, मानसिक द्वंद्व, मूल्यविषयक संघर्ष आदि को अधिक गहराई और सर्जनात्मकता के साथ उपन्यास का विषय बनाने का श्रेय जैनेंद्र कुमार को है।"
- 'परख' उपन्यास का केंद्रीय विषय प्रेम के एक विशेष आदर्श का चित्रण है प्रेम का त्रिकोण तथा 'पत्नी' व 'प्रेमिका' का द्वंद्व उपन्यास में चित्रित हुआ है।
- 'सुनीता' उपन्यास से जैनेंद्र उपन्यासकार के रूप में स्थापित हुए। 'सुनीता' में दाम्पत्य प्रेम तथा दाम्पत्य से बाहर के प्रेम के मध्य तनाव का चित्रण हुआ है। उपन्यास में जैनेंद्र ने दाम्पत्य से बाहर प्रेम करने के स्त्री अधिकार की वकालत की है।
- 'त्यागपत्र' जैनेंद्र का सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास है। उपन्यास में 'मृणाल' के माध्यम से स्त्री के आत्मपीड़क तथा विद्रोही व्यक्तित्व का चित्रण हुआ है।

- 'मुक्तिबोध' जैनेंद्र का राजनीतिक विमर्श का उपन्यास है।

इलाचंद्र जोशी

- इलाचंद्र जोशी कृत 'घृणामयी' उपन्यास 1950 ई. में 'लज्जा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ।
- 'घृणामयी' उपन्यास आत्मकथात्मक प्रविधि में लिखित एक युवती के पश्चाताप की कथा है।
- 'संन्यासी' में नायक नंदकिशोर के अहंभाव का मनोविश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखित है। शीर्षक के अनुसार नंदकिशोर अंत में संन्यासी होकर देश सेवा में लग जाता है।
- 'पर्दे की रानी' उपन्यास में ऐसी नायिका (निरंजना) का चित्रण है जो खूनी पिता तथा वेश्या माँ की पुत्री होने की जानकारी के पश्चात् हीन भावना से ग्रस्त हो जाती है तथा समाज के प्रति घृणा का भाव रखने लगती है।

- 'निर्वासित' उपन्यास में महीप और नीलिमा के प्रेम का चित्रण हुआ है।
- 'जहाज का पंक्षी' इलाचंद्र जोशी का सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास है। इसमें एक शिक्षित युवा का रोज़गार की तलाश में भटकने (कलकत्ता में) तथा उस प्रक्रिया में उसकी मनोदशा का चित्रण किया गया है।
- 'कवि की प्रेयसी' उपन्यास में कालिदास के नाटक 'मालविकाग्निमित्रम्' में चित्रित पात्र कवि नाटककार 'सौमिल्लिक' के जीवन का काल्पनिक चित्रण हुआ है।
- डॉ. गोपाल राय के अनुसार, "इलाचंद्र जोशी को हिंदी में मनोवैज्ञानिक उपन्यास का पुरस्कर्त्ता माना जा सकता है। यों तो जैनेंद्र कुमार ने उपन्यास में सामाजिक प्रश्नों की तुलना में मनोवैज्ञानिक स्थितियों को अधिक महत्त्व देने की पहल की, पर शुद्ध मनोवैज्ञानिक समस्याओं को केंद्र में रखकर उपन्यास लिखने की पहली कोशिश जोशी जी ने ही की।"

अज्ञेय

- अज्ञेय ने अपने प्रयोगों के माध्यम से मनोविश्लेषणवादी उपन्यास को एक नया आयाम प्रदान किया।
- 'शेखर: एक जीवनी' अज्ञेय का अतिमहत्त्वपूर्ण उपन्यास है। 'शेखर: एक जीवनी' में नायक शेखर के व्यक्तित्व को उपन्यास का विजन बनाया गया है। प्रथम भाग में शेखर के बाल, वय: संधि और किशोर मन का मनोवैज्ञानिक अंकन किया गया है।
- 'शेखर: एक जीवनी' कथ्य के साथ-साथ भाषा एवं शिल्प के स्तर पर भी हिंदी उपन्यास की परंपरा को एक नई दिशा प्रदान करता है।
- 'शेखर: एक जीवनी' पर रोमा रोलां की पुस्तक 'ज्यां क्रिस्टॉफ' का प्रभाव माना जाता है, जिसे स्वयं अज्ञेय ने स्वीकार किया है।

- 'शेखर: एक जीवनी' फ्लैशबैक/पूर्व दीप्ति शैली में लिखित उपन्यास है।
- शेखर: एक जीवनी को 'प्रकाशमान पुच्छल तारा' कहकर उसकी आलोचना की गई है।
- अज्ञेय ने शेखर के संबंध में लिखा है– "शेखर की खोज अन्ततोगत्वा स्वतंत्रता की खोज है।"
- 'नदी के द्वीप' उपन्यास में रेखा, भुवन तथा गौरा का प्रेम त्रिकोण चित्रित हुआ है। इसमें भुवन, चंद्रमाधव, रेखा और गौरा की मनोदशाओं का चित्रण हुआ है।
- अज्ञेय ने 'नदी के द्वीप' को 'चार संवेदनाओं का अध्ययन' कहा है।
- 'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास में अज्ञेय ने योके और सेल्मा नामक पात्रों के माध्यम से जीवन, मृत्यु, वरण की स्वतंत्रता, आस्था आदि से संबंधित सवालों पर विचार किया है।
- 'अपने-अपने अजनबी' में व्यक्ति के मृत्यु से साक्षात्कार के प्रश्न को उठाया गया है।

डॉ. देवराज

- डॉ. देवराज का प्रथम उपन्यास 'पथ की खोज' दो खंडों में 1951 ई. में प्रकाशित हुआ। उपन्यास का केंद्रीय विषय प्रेम एवं विवाह की नैतिकता से संबद्ध है। उपन्यास में एक स्त्री या पुरुष के एक से अधिक पुरुषों या स्त्रियों से प्रेम करने के नैतिक प्रश्न को उठाया है।
- डॉ. देवराज कृत 'बाहर भीतर' उपन्यास का दूसरा संस्करण 'भीतर का घाव' शीर्षक से प्रकाशित हुआ।
- 'अजय की डायरी' डॉ. देवराज का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है। डॉ. गोपाल राय के अनुसार इसमें विश्वविद्यालय परिसर की पृष्ठभूमि में एक असफल वैवाहिक जीवन और मध्यवर्गीय सामाजिक-नैतिक मूल्यों के दबाव में प्रेम के त्रासद अंत का चित्रण हुआ है।
- डॉ. देवराज के अधिकतर उपन्यास प्रेम एवं दाम्पत्य की समस्याओं से संबंधित है।

- डॉ. देवराज कृत 'मैं वे और आप' उपन्यास को स्वतंत्र उपन्यास कहने के साथ ही स्वयं लेखक ने इसे 'अजय की डायरी' का अगला भाग कहा हैं।

सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास

- इस धारा के लेखक किसी भी विचारधारा के मोह से बचते हुए अपनी स्वतंत्र दृष्टि से समाज एवं व्यक्ति की समस्याओं का सूक्ष्म अंकन करते हैं।
- इस धारा के उपन्यासों की यह बड़ी विशेषता है कि ये न तो प्रगतिवादी उपन्यासकारों की तरह समाज को अधिक महत्त्व देते हैं और न ही मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों की तरह व्यक्ति को। यह व्यक्ति व समाज को जोड़कर देखते हैं।

प्रमुख सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासकार एवं उपन्यास

उपन्यासकार (ई. में)	उपन्यास (ई. में)			
विष्णु प्रभाकर (1912-2009)	1. ढलती रात (1951)	4. स्वप्नमयी (1956)	7. अर्द्धनारीश्वर (1992)	10. संस्कार (2014)
	2. निशिकांत (1955)	5. दर्पण का व्यक्ति (1968)	8. संकल्प (1993)	
	3. तट के बंधन (1955)	6. कोई तो (1980)	9. स्वप्न (2014)	

उदयशंकर भट्ट (1898-1966)	1. नये मोड़ (1954)	3. लोक-परलोक (1958)	5. दो अध्याय (1963)
	2. सागर लहरें और मनुष्य (1956)	4. शेष-अशेष (1960)	
उपेंद्रनाथ 'अश्क' (1910-1996)	1. सितारों के खेल (1940)	5. पत्थर अल पत्थर (1957)	9. बाँधों न नाँव इस ठाँव (1974)
	2. गिरती दीवारें (1947)	6. शहर में घूमता आईना (1963)	10. निमिषा (1974)
	3. बड़ी-बड़ी आँखें (1955)	7. एक रात का नाटक (1968)	11. पलटती धारा (1997)
	4. गर्म राख (1957)	8. एक नन्हीं कंदील (1969)	
अमृतलाल नागर (1916-1960)	1. महाकाल (1947)	6. अमृत और विष (1966)	11. खंजन नयन (1981)
	2. सेठ बाँके लाल (1955)	7. सात घूँघट वाला मुखड़ा (1968)	12. बिखरे तिनके (1982)
	3. बूँद और समुद्र (1956)	8. एकदा नैमिषारण्ये (1972)	13. अग्निगर्भा (1983)
	4. शतरंज के मोहरे (1959)	9. मानस का हंस (1972)	14. करवट (1985)
	5. सुहाग के नूपुर (1960)	10. नाच्यौ बहुत गोपाल (1978)	15. पीढ़ियाँ (1990)
भीष्म साहनी (1915-2003)	1. झरोखा (1967)	4. बसंती (1980)	7. नीलू नीलिमा नीलोफर (2000)
	2. कड़ियाँ (1970)	5. मय्यादास की माड़ी (1988)	8. जयहिंद की सेना (2010)
	3. तमस (1973)	6. कुंतो (1993)	
अमरकांत (1925-2014)	1. सूखा पत्ता (1959)	4. काले उजे दिन (1969)	7. सुन्नर पांडे की पतोह
	2. ग्रामसेविका (1962)	5. बीच की दीवार (1981)	8. खुदी राम
	3. आकाश पक्षी (1967)	6. सुखजीवी (1982)	9. इन्हीं हथियारों से (2003)

विष्णु प्रभाकर

- 'विष्णु प्रभाकर' कृत 'निशिकांत', उनके पहले उपन्यास ढलती रात (1951) का ही पुनर्लिखित रूप है।
- 'ढलती रात' में ब्रिटिश भारत के सन् 1920 से 1936 ई. तक की सामाजिक राजनीतिक स्थितियों का चित्रण हुआ है।
- 'तट के बंधन' उपन्यास में प्रेम एवं विवाह तथा नारी समस्याओं को केंद्र में रखकर लिखा गया है।
- 'अर्द्धनारीश्वर' उपन्यास में स्त्री के शोषण, बलात्कार एवं यातना का वर्णन करते हुए स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलता का अंकन किया गया है।

उदशंकर भट्ट

- 'उदशंकर भट्ट' कृत 'सागर, लहरें और मनुष्य' को कई विद्वान आंचलिक उपन्यास मानते हैं। इसमें बरसोवा के मछुआरों की ज़िंदगी का यथार्थ एवं मार्मिक चित्रण हुआ है।
- 'लोक-परलोक' में ग्रामीण जीवन पर आधुनिक सभ्यता के बढ़ते प्रभावों का चित्रण किया गया है।
- 'शेष-अशेष' में साधु-संन्यासियों के पाखंडयुक्त भ्रष्ट चरित्र चित्रण हुआ है।

उपेंद्रनाथ 'अश्क'

- उपेंद्रनाथ 'अश्क' कृत 'एक रात का नरक' उपन्यास 'अश्क' के ही उपन्यास 'एक नन्हीं कंदील' का एक अंश है।

अमृतलाल नागर

- 'अमृतलाल नागर' ने तीन प्रकार के उपन्यास लिखे हैं– एक सामाजिक

यथार्थ के उपन्यास, दूसरा सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन के उपन्यास जिनकी पृष्ठभूमि सन् 1850 से 1950 ई. तक का समय है तथा तीसरा ऐतिहासिक-सांस्कृतिक उपन्यास।

- 'अमृतलाल नागर' कृत 'महाकाल' उपन्यास में बंगाल के अकाल की त्रासदी का चित्रण हुआ है।
- 'बूँद और समुद्र' उपन्यास को अमृतलाल नागर ने उपन्यास की भूमिका में 'देश के मध्यवर्गीय नागरिक समाज का गुणदोष भरा चित्र' कहा है।
- 'बूँद और समुद्र' में व्यक्ति और समाज के अंत: संबंधों का विश्वसनीय चित्रण है। उपन्यास लखनऊ के एक बड़े और पुराने क्षेत्र 'चौक' पर केंद्रित है। उपन्यास का समयकाल भारतीय गणतंत्र की स्थापना के आस-पास का है।

- डॉ. गोपाल राय ने 'बूँद और समुद्र' को 'महाकाव्यात्मक आयाम का उपन्यास' कहा है।
- 'शतरंज के मोहरे' उपन्यास में 1820 से 1837 ई. तक के अवध क्षेत्र के जीवन का वर्णन है। इसमें अवध के नवाबों एवं अंग्रेजों के बढ़ते वर्चस्व के मध्य पिसती हुई अवध की जनता का चित्रण हुआ है।
- 'सुहाग के नूपुर' तमिल महाकाव्य 'शिलप्यदिकारम्' पर आधारित उपन्यास है। इसमें मध्यकालीन कुलवधुओं तथा बाहरी वधुओं का चित्रण हुआ है।
- 'सात घूँघट वाला मुखड़ा' उपन्यास के केंद्र में 'बेगम समरू' का चरित है।
- 'मानस का हंस' तथा 'खंजन नयन' क्रमशः तुलसीदास तथा सूरदास के जीवन को केंद्र में रखकर लिखे गए जीवनीपरक उपन्यास हैं।

- 'नाच्यो बहुत गोपाल' उपन्यास दलित समाज पर केंद्रित है। उपन्यास की प्रमुख पात्र निर्गुनिया के ब्रह्मण युवती से मेहतर समाज में जाने की कथा वर्णित है।
- 'करवट' उपन्यास में लखनऊ के एक खत्री परिवार की तीन पीढ़ियों– लाला मुसद्दीलाल, उनके पुत्र वंशीधर टंडन तथा पौत्र देशदीपक से संबद्ध कथा वर्णित है। 'करवट' में वर्णित समयकाल लगभग 1805 ई. से 1905 ई. तक का है।
- 'पीढ़ियाँ' उपन्यास 'करवट' का अगला चरण है। इसमें खत्री परिवार की आगे की तीन और पीढ़ियों की कथा है। इसमें 1905 ई. से 1985 तक का इतिहास समेटा गया है।

भीष्म साहनी

- भीष्म साहनी सामाजिक यथार्थवाद के महत्त्वपूर्ण रचनाकार हैं।
- भीष्म साहनी कृत 'झरोखे' उपन्यास में एक बच्चे के माध्यम से आर्य समाजी परिवार की संस्कारगत जड़ता का विश्लेषण एवं उसके प्रति विद्रोह की प्रेरणा है।
- 'कड़ियाँ' में विपरीत संस्कारों वाले मध्यमवर्गीय 'पति-पत्नी' की जीवन कथा वर्णित है। इसमें लेखक ने स्त्री की आर्थिक आत्मनिर्भरता के अभाव में पुरुष की बढ़ती हुई निरंकुशता और उसके परिणामस्वरूप परिवार विघटन की अनिवार्यता को रेखांकित किया है।
- 'वसंती' में महानगर दिल्ली में राजस्थान के अप्रवासियों की झुग्गी बस्ती में रहने वाली एक भावुक लड़की बसंती की कहानी है। उपन्यास की केंद्रीय पात्र वसंती शोषण का शिकार होने पर भी जीवन में आस्था बनाए रखती है तथा व्यवस्था से लड़ती है।
- 'तमस' भीष्म साहनी का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। यह 1947 ई. के मार्च-अप्रैल में पंजाब में हुए भयानक सांप्रदायिक दंगों पर आधारित है तथा इसमें लाहौर के आस-पास के पाँच दिनों की कहानी वर्णित है।

- 'तमस' में सांप्रदायिक उन्माद के चित्रण के साथ-साथ उन स्थितियों और कारणों का भी चित्रण हुआ है जिसके फलस्वरूप आपसी वैमनस्य ने दंगों का रूप ले लिया। ब्रिटिश शासन और उसके कारिंदों को दंगे भड़काने की योजना का सूत्रधार चित्रित किया गया है।
- 'मय्यादास की माड़ी' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखित उपन्यास है। इसमें सन् 1840 से 1920 ई. तक के पंजाब के सामाजिक-राजनीतिक जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। उपन्यास में 'मय्यादास', 'धनपत' तथा 'हुकूमत राय' के माध्यम से तीन पीढ़ियों की सामाजिक सांस्कृतिक चेतना के क्रमिक विकास का इतिहास प्रस्तुत किया है।
- 'कुंतो' उपन्यास में नारी जाति की पराधीनता का अंकन हुआ है। इसमें विभिन्न स्त्री पात्रों के पतियों की परस्त्रीगमन की समस्या को उठाया गया है।
- 'नीलू नीलिमा नीलोफर' में हिंदू-मुस्लिम युवक-युवतियों के प्रेम संबंध की कथा कही गई है।

अमरकांत

- अमरकांत कृत 'काले उजाले दिन' में परिवार में विमाता की उपस्थिति से नायक के व्यक्तित्व का विघटन दिखाया गया है।
- 'बीच की दीवार' में एक स्त्री के अनेक पुरुषों के प्रति आकर्षण की कहानी कही गई है।
- 'इन्हीं हथियारों से' अमरकांत का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है। इसमें नायक 'बलिया जनपद' है। उपन्यास में 'भारत छोड़ो आंदोलन' (1942) से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक के बलिया के सामाजिक जीवन का चित्रण हुआ है।
- 'इन्हीं हथियारों से' के लिये 2007 का साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया था।
- इन्हें श्रीलाल शुक्ल के साथ संयुक्त रूप से 2009 के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

प्रमुख व्यक्तिवादी उपन्यासकार एवं उपन्यास

उपन्यासकार (ई. में)	उपन्यास (ई. में)		
भगवतीचरण वर्मा (1903-1981)	1. पतन (1928)	7. भूले बिसरे चित्र (1959)	13. सबहिं नचावत राम गोसाईं (1970)
	2. चित्रलेखा (1934)	8. वह फिर नहीं आई (1960)	14. प्रश्न और मरीचिका (1973)
	3. तीन वर्ष (1936)	9. सामर्थ्य और सीमा (1962)	15. युवराज चूंडा (1978)
	4. टेढ़े-मेढ़े रास्ते (1946)	10. थके पाँव (1963)	16. धुप्पल (1981)
	5. आखिरी दाँव (1950)	11. रेखा (1964)	17. चाणक्य (1982)
	6. अपने खिलौने (1957)	12. सीधी सच्ची बातें (1968)	
लक्ष्मीनारायण लाल (1927-1987)	1. धरती की आँखें (1951)	6. मन वृंदावन (1966)	11. देवीना (1976)
	2. बया का घोंसला और साँप (1953)	7. प्रेम अपवित्र नदी (1972)	12. पुरुषोत्तम (1983)
	3. काले फूल का पौधा (1955)	8. बड़के भैया (1973)	13. गली अनारकली (1985)
	4. रूपा जीवा (1959)	9. हरा समंदर गोपी चंदर (1974)	14. कनाट पैलेस (1986)
	5. बड़ी चम्पा छोटी चम्पा (1961)	10. वसंत की प्रतीक्षा (1975)	

भगवतीचरण वर्मा

- 'भगवतीचरण वर्मा' के संबंध में **'मधुरेश'** लिखते हैं– "प्रेमचंद और उनकी परंपरा के लेखकों से भिन्न भगवतीचरण वर्मा ने 'व्यक्ति' को एक पृथक आधारभूत सत्ता मानते हुए 'समाज' से अलग और हटकर माना। व्यक्तिगत जीवन से संबद्ध प्रेम, नैतिकता, पाप-पुण्य आदि को ही उन समस्याओं के रूप में अपने उपन्यासों में स्थान दिया।"
- भगवतीचरण वर्मा को व्यक्तिवादी तथा नियतिवादी/भाग्यवादी उपन्यासकार माना जाता है।
- 'चित्रलेखा' उपन्यास में पाप एवं पुण्य के नैतिक प्रश्न को उठाया गया है। चित्रलेखा पर फ्रेंच उपन्यासकार 'अनातोले' के उपन्यास 'थाया' (Thais) का प्रभाव माना जाता है।
- 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' में एक परिवार की दो पीढ़ियों के मध्य अंतराल चित्रित किया गया है साथ ही गांधीवाद, साम्यवाद और आतंकवाद को टेढ़े-मेढ़े और यथार्थ से परे रास्ते के रूप में चित्रित किया गया है।
- 'तीन वर्ष' में प्रेम के विवाह में परिणत होने पर आने वाली समस्याओं का चित्रण हुआ है।
- गोपाल राय के अनुसार- "भूले बिसरे चित्र' में तीन पीढ़ियों (1890-1930) की सोच और मानसिकता के बदलाव, पुरानी पीढ़ी के साथ नई पीढ़ी के संघर्ष, औपनिवेशिक शासन के प्रति बुद्धिजीवी वर्ग के मोहभंग और विद्रोह का अंकन किया गया है।"

- 'सच्ची सीधी बातें' में राष्ट्रीय आंदोलन (1938 से 1948 ई.) को बुद्धिजीवियों और नेताओं के दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है।
- 'सबहिं नचावत राम गुसाईं' उपन्यास में 1919 से 1965 ई. के बीच समाज के दूषित भ्रष्टाचारमय जीवन का आलोचनात्मक चित्रण प्रस्तुत किया गया है।
- 'धुप्पल' भगवतीचरण वर्मा का आत्मकथात्मक उपन्यास है।
- 'युवराज चूंडा' तथा 'चाणक्य' ऐतिहासिक श्रेणी के उपन्यास हैं।

लक्ष्मीनारायण लाल

- लक्ष्मीनारायण लाल कृत 'धरती की आँखें' आलोचक मधुरेश के अनुसार एक आदर्शवादी और इकहरी बुनावट वाला उपन्यास है।

ऐतिहासिक उपन्यास

- वृंदावनलाल वर्मा, हजारीप्रसाद द्विवेदी, चतुरसेन शास्त्री आदि प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासकार माने जाते हैं। चतुरसेन शास्त्री का विवेचन प्रेमचंद युग के अंतर्गत किया जा चुका है।
- रांगेय राघव, राहुल सांकृत्यायन, अमृतलाल नागर आदि लेखकों ने भी कुछ प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यास लिखे हैं किंतु उपर्युक्त लेखकों का विवेचन 'ऐतिहासिक उपन्यास' के अंतर्गत न करके उनकी प्रमुख प्रवृत्तियों के अनुसार ही उनका विवेचन किया गया है।

प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासकार एवं उपन्यास

उपन्यासकार (ई. में)	उपन्यास (ई. में)		
वृंदावनलाल वर्मा (1889-1969)	1. लगन (1928)	7. कचनार (1948)	13. माधवजी सिंधिया (1957)
	2. गढ़कुंडार (1929)	8. मृगनयनी (1950)	14. रामगढ़ की रानी (1961)
	3. कुण्डलीचक्र (1929)	9. अमरबेल (1952)	15. महारानी दुर्गावती (1964)
	4. प्रेम की भेंट (1931)	10. टूटे-काँटे (1954)	16. कीचड़ और कमल (1964)
	5. विराटा की पद्मिनी (1936)	11. अहिल्याबाई (1955)	17. सोती आग (1966)
	6. झाँसी की रानी (1946)	12. भुवन विक्रम (1957)	18. देवगढ़ की मुस्कान (1973)
हजारीप्रसाद द्विवेदी (1907-1979)	1. बाणभट्ट की आत्मकथा (1946)	3. पुनर्नवा (1973)	
	2. चारुचंद्रलेख (1963)	4. अनामदास का पोथा (1976)	
सन्हैयालाल ओझा	1. सम्पर्क और समर्पण (1950)	4. सिंधु सीमान्त (1967)	7. कसौटी (2000)
	2. मनुष्य का मूल्य	5. सर्वनाम (1976)	
	3. मकड़ी का जाल	6. सम्भवामि (1983)	

शिवप्रसाद मिश्र रुद्र 'काशिकेय'	1. बहती गंगा (1952)	2. सचितात	
राजीव सक्सेना	1. पणि पुत्रो सोमा (1972)	2. रमैनी (2000)	
वीरेंद्र कुमार जैन	अनुत्तर योगी : तीर्थंकर महावीर (चार खंडों में)		
आनंद प्रकाश जैन (1927)	1. तीसरा नेत्र (1957) 2. कठपुतली के धागे (1959)	3. कुणाल की आँखें (1967) 4. आठवीं भाँवर (1969)	5. ताँबे के पैसे (1972)
शरत पागरे	1. गुलारा बेगम (1984)	2. गंधर्वसेन (1987)	3. बेगम जैनवादी (1996)
रामकुमार 'भ्रमर' (1938-1998)	1. फौलाद का आदमी (1969)	2. काँच का घर (1971)	
जयशंकर द्विवेदी	महाकवि कालिदास की आत्मकथा (1987)		
बच्चन सिंह	1. सूतो वा सूत पुत्रो वा (1998)	2. पांचाली (2001)	